ख़ुशबू या बदबू ?

सफल ज़िंदगी का राज़

ḳhushbū yā badbū? saphal zindagī kā rāz

Fragrance or a Foul Odour? The Secret of a Successful Life

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 22]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/flask-decanter-beaker-chemistry-30532/; 499798
https://pixabay.com/illustrations/smoke-colors-wallpaper-662747/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मर्था का-सा जोश अपनाओ	2
मरियम जैसे दीवाना हो जाओ	4
अपनी हरकतों से ख़ुशबू फैलाओ	6
मुहब्बत से ख़ाली सोच से दूर रहो	9
मेरा क्या जवाब है?	11
इंजील, यूहन्ना 12:1-11	12

हर इनसान के दिल में एक गहरी ख़ाहिश होती है। ख़ाहिश क्या है? यह कि मेरी ज़िंदगी सफल हो, मेरा जीवन कामयाब निकले। मेरी ज़िंदगी किस तरह कामयाब हो सकती है? यूहन्ना 12 में इसका अजीबो-ग़रीब जवाब मिलता है। एक जवाब जो आम सोच से कहीं दूर है। आइए हम इस पर ग़ौर करें।

लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा करने के बाद ईसा मसीह लाज़र के गाँव बनाम बैत-अनियाह से चला गया था।

► **वह क्यों चला गया था?**

उसके मुख़ालिफ़ यह मोजिज़ा देखकर ख़ुश नहीं थे। इसके उलट वह उसके ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगे। ईसा मसीह उनके मनसूबे जानता था इसलिए वह चला गया। उसे मालूम तो था कि उसे पकड़ा जाएगा। लेकिन वह यह भी जानता था कि अब तक ख़िदमत के कुछ दिन बाक़ी रह गए हैं।

यह बात ज़हन में रखकर वह कुछ देर के लिए कहीं और ख़िदमत करने लगा। लेकिन एक दिन वह दुबारा बैत-अनियाह पहुँचा। यह ख़बर सूखे

हुए जंगल में आग की तरह फैल गई। गाँव के लोग इतने ख़ुश हुए कि उन्होंने ईसा मसीह को दावत देकर खाने का ख़ास इंतज़ाम किया। अब ध्यान दें : यह दावत लाज़र की तरफ़ से नहीं थी। किसी और ने अपने घर में यह इंतज़ाम करवाया। तो भी मर्था आकर मदद करने में जुट गई। यह बात हमें एक अहम सबक़ सिखाती है। यह कि

मर्था का-सा जोश अपनाओ

► **मर्था क्यों ईसा मसीह की ख़िदमत करने लगी हालाँकि यह ज़ियाफ़त उसके अपने घर में नहीं थी?**

जिसे ईसा मसीह की मुहब्बत पकड़कर शागिर्द बना लेती है वह ख़ुशी से ख़िदमत करता है। उसे अपनी ही इज़्ज़त की फ़िकर नहीं रहती।

► **तो मर्था इतने जोश से क्यों इस ख़िदमत में लग गई?**

इसलिए कि वह ईसा मसीह के लिए शदीद मुहब्बत महसूस करती थी। कोई भी काम बोझ नहीं लगता था।

एक औरत का ज़िक्र है जो अपने शौहर से नफ़रत रखती थी। वह हर फ़र्ज़ अदा तो करती थी, मगर बड़ी मुश्किल से। मिसाल के तौर पर बीवी को रोज़ाना छः बजे सुबह तक उसका नाश्ता तैयार रखना था। इस क़िस्म का काम उसे हमेशा ज़ुल्म और ज़्यादती लगता था और वह उसके तहत कुढ़ती रहती थी।

एक दिन शौहर वफ़ात पा गया, और होते होते औरत की किसी और से शादी हुई। नया शौहर हलीम था, और उनका आपस में प्यार बढ़ता गया। एक दिन बीवी को अलमारी से एक पुरानी कापी मिली जिसमें पुराने शौहर के तमाम हुक्म दर्ज थे। उसमें यह भी लिखा था कि बीवी को हर सूरत में 6 बजे सुबह तक ब्रेकफ़ास्ट तैयार रखना है। तब औरत को एक अजीब सी बात महसूस हुई। उसने सोचा, अब भी मैं अपने शौहर के लिए सुबह 6 बजे नाश्ता बनाती हूँ। अब भी मैं यह सारे हुक्म पूरे करती हूँ। लेकिन मैंने कभी भी दिक़्क़त महसूस न की। अब तो मैं इससे ज़्यादा मुश्किल काम करती हूँ।

► **आपका क्या ख़याल है। उसने क्यों कभी दिक़्क़त महसूस नहीं की थी?**

इसलिए कि बीवी अपने नए शौहर से शदीद मुहब्बत रखती थी। मुहब्बत के बाइस कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता था।

देखो, मर्था उस औरत की तरह थी : वह अपने आक़ा को इतनी प्यार करती थी कि किसी भी काम में दिक़्क़त महसूस नहीं होती थी। अब तो वह यह काम करते वक़्त बड़ी ख़ुशी महसूस करती थी। यहाँ तक कि वह दूसरे के घर में गई ताकि अपने आक़ा की ख़िदमत करे।

यही ईसा मसीह और शरीअत में फ़रक़ है : शरीअत हमें बताती रहती है कि हमें क्या करना है। और हम जानते भी हैं कि उसके हुक्म सही

हैं। लेकिन हम हमेशा कुढ़ते रहते हैं। इसके मुक़ाबले में जब ईसा मसीह हमारे दिलों में बसता है तो हम यह हुक्म ख़ुशी से सरंजाम देते हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि उसकी मुहब्बत और हुज़ूरी हमारे अंदर रहती है। तब हम ख़ुद बख़ुद यह काम करना चाहते हैं, और हम दुख महसूस करते हैं जब कभी इसमें फ़ेल हो जाते हैं।

► **क्या आपके दिल में यह मुहब्बत बसती है? क्या ईसा मसीह आपके दिल में बसता है?**

जब वह हमारे दिल में बसता है तो हमें सचमुच आज़ादी हासिल है—वह आज़ादी जो सिर्फ़ और सिर्फ़ इंजील की ख़ुशख़बरी से मिलती है।

लाज़र भी खाने में शरीक था। अब तक वह लोगों के ध्यान का मरकज़ रहा था। अब तक सब हैरान थे कि कफ़न में लिपटा हुआ यह आदमी किस तरह क़ब्र में से निकला था। तब एक वाक़िया हुआ जो हमें एक और सबक़ सिखाता है। यह कि

मरियम जैसे दीवाना हो जाओ

अचानक लाज़र और मर्था की बहन मरियम कमरे में दाख़िल हुई। वह बेचैन थी। उसके हाथ में निहायत क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उसने सारे मेहमानों के सामने इत्रदान का मुँह तोड़कर पूरा इत्र उस्ताद पर उंडेल

दिया। फिर पाँवों पर टपकते तेल को अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क किया।

मेज़बान हक्का-बक्का रह गए। यह कैसी हरकत थी? हाँ, यह थी कैसी हरकत? यहाँ की तरह ख़वातीन अपने बालों को खुले कभी नहीं रखती थीं। फिर किसी के पाँवों को अपने बालों से पोंछना—ऐसी हरकत कोई नहीं करता था। ग़ुलाम भी ऐसी हरकत नहीं करते थे। लेकिन मरियम को कोई परवाह नहीं थी।

► **मरियम को परवाह क्यों नहीं थी?**

ऐसा काम सिर्फ़ वह करता है जो किसी के बारे में इतना पागल है कि उसे दूसरों की परवाह ही नहीं रहती। एक और मौक़े पर मरियम ईसा मसीह की बातों से इस क़दर मुतअस्सिर हुई थी कि मर्था को उसे झिड़की देनी पड़ी। क्योंकि उस्ताद की बातों के जादू में आकर वह मेज़बानों की ख़िदमत करना भूल गई थी। ईसा मसीह की हुज़ूरी यों उसके दिमाग़ पर बैठ गई थी कि वह हिल भी नहीं सकती थी।

► **क्या आप ईसा मसीह के बाइस इस तरह पागल हो गए हैं?**

एक और बात मरियम के ज़हन में ज़रूर थी। इसराईल में तीन क़िस्म के लोगों के सर पर तेल उंडेला जाता था—बादशाह पर, नबी पर और इमाम पर।

► **तेल क्यों उनके सर पर उंडेला जाता था?**

इससे उन्हें अपनी ख़िदमत के लिए मख़सूस किया जाता था। अल-मसीह का मतलब ही यह है यानी वह जिसे मसह किया गया है, जिस पर तेल उंडेल दिया गया है, जो ख़ुदा से एक ख़ास काम के लिए मख़सूस किया गया है।

मरियम को यक़ीन था कि ईसा मसीह यह सब कुछ है : वह मेरा बादशाह, मेरा नबी, मेरा इमाम है। उसे यक़ीन था कि यही अल-मसीह है, वह हस्ती जो मुझे मेरे गुनाहों से रिहा करेगा। जो मुझे फ़िरदौस में दाख़िल होने के क़ाबिल बना देगा।

इसी हस्ती के सामने हम किस तरह ठंडे दिल खड़े रह सकते हैं? जब हम ईसा मसीह के पक्के शागिर्द हो जाते हैं तब हम पागल हो जाते हैं। तब उसके पाँवों में झुककर अपने बालों से उन्हें पोंछना अजीब या नामुनासिब नहीं लगता। हम इससे एक तीसरा सबक़ भी सीखते हैं, यह कि

अपनी हरकतों से ख़ुशबू फैलाओ

जब मरियम ने इत्र उंडेल दिया तो ख़ुशबू घर के कोने कोने तक पहुँच गई। मरियम की यह हरकत छिपी न रही। वह सब पर ज़ाहिर हुई।

► **हम इससे अपने लिए क्या सीख सकते हैं?**

जब हम ईसा मसीह के बाइस पागल हो जाते हैं तो इसकी ख़ुशबू पूरी दुनिया में फैल जाती है।

► **क्या आप इस तरह पागल हो गए हैं कि आपसे ख़ुशबू फैल रही है? या क्या आपकी बदबू लोगों को भगा देती है?**

► **दूसरा सवाल, किस तरह पता चलता है कि हमसे ख़ुशबू फैलती है?**

इससे कि हम मसीह के पाँव पोंछ देते हैं। ध्यान दें कि मरियम ने सर को नहीं पोंछ दिया बल्कि पाँवों को।

► **मरियम ने क्यों सर को नहीं बल्कि पाँवों को पोंछ दिया?**

पोंछने का यह काम हलीमी का काम है। जो यह काम करता है वह अपने आपको सर को पोंछने के लायक़ नहीं समझता।

कुछ फूल देखने में बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन उनकी ख़ुशबू नहीं होती। बहुत-से ईमानदार ऐसे फीके होते हैं। उनसे मालूम नहीं होता कि वह ईसा मसीह के शागिर्द हैं।

► **क्यों?**

उन्होंने कभी अपने बालों से उसके पाँव नहीं पोंछे। ऐसे लोगों का ईमान बेमानी है।

► **पाँव पोंछना इतना मुश्किल क्यों होता है?**

पाँव गंदे रास्तों पर चलते हैं, इसलिए वह धूल और गंद से लतपत हो जाते हैं। इसलिए क़दीम ज़माने में लोग किसी के पाँवों को धोकर पोंछने से अपनी हलीमी ज़ाहिर करते थे, साथ साथ वह दूसरे की ख़ास इज़्ज़त करते थे।

► **तो आज हम किस तरह मसीह के पाँव पोंछ सकते हैं?**
आज हम ज़रूरतमंदों की ख़िदमत करने से उसके पाँव पोंछ सकते हैं। दूसरों पर राज करना—यह ईसा मसीह की राह नहीं है। अपने आप को दूसरों से छोटा समझना—यही ईसा मसीह की राह है। क्या यह एक ऐसी बात नहीं है जो उस के बहुत से शागिर्द भूल गए हैं? क्या अजब जब उन की ज़िंदगी फीकी और नाकाम रह जाती है?

► **अब ध्यान दें : जब मरियम ने अपने बालों से अपने आक़ा के पाँव पोंछकर ख़ुश्क किए तो उसके बालों के साथ क्या हुआ?**
अपने बालों से उसके पाँव पोंछने से यह ख़ुशबू मरियम के बालों में भी आ गई।

► **जब हम ईसा मसीह के पाँव पोंछते हैं तो हमारे बालों के साथ क्या हो जाता है?**
जब हम उसके पाँवों को पोंछते हैं तो उसकी ख़ुशबू हमारे बालों में भी आ जाती है—वह ख़ुशबू जो हमें उसकी याद दिलाती है; वह महक जो दूसरों में भी फैल जाती है। यही हमारी ज़िंदगी का असल मक़सद है। कि हम अपने आक़ा की ख़ुशबू दूसरों में फैलाएँ।

एक चौथा सबक़,

मुहब्बत से ख़ाली सोच से दूर रहो

इत्र की ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई। सब यह ख़ुशबू सूँघ सूँघकर तरो-ताज़ा हो गए। सब ख़ुशबू के जादू में आ गए।

► **क्या सचमुच सब?**

नहीं। एक नाख़ुश हुआ। ईसा मसीह का शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ग़ुस्से हुआ। उसने एतराज़ किया, "इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए जाते?"

► **क्या यह बात सच नहीं थी?**

ज़रूर। कुछ बातें सच तो होती हैं मगर फिर भी कुछ मौक़ों पर ग़लत साबित होती हैं। यह एक ऐसा मौक़ा था।

► **चाँदी के 300 सिक्कों की क्या क़ीमत थी?**

उस ज़माने में मज़दूर दिन में एक सिक्का कमाता था। ग़रज़ वह साल में लगभग 300 सिक्के कमा सकता था। मतलब है यह इत्र काफ़ी महँगा था। जो इत्र मरियम ने उंडेल दिया था वह बेशक़ीमत था।

► **क्या यहूदाह ने यह बात इसलिए छेड़ी कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी?**

नहीं। असल में वह चोर था। जो थोड़े बहुत पैसे शागिर्दों को रास्ते में मिलिते थे उन्हें वह सँभालता था। कुछ न कुछ वह अपने लिए

निकालता रहता था। तो भी क्या उसकी बात दुरुस्त नहीं थी? क्या मरियम यह इत्र बेचने से ग़रीबों की बहुत मदद नहीं कर सकती थी? ईसा मसीह का जवाब हमें चौंका देता है। उसने फ़रमाया, "उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।"

► **इसका क्या मतलब है?**

ग़रीबों की मदद करना बेशक अच्छा है। लेकिन ऐसा काम कभी हमारे ध्यान का मरकज़ नहीं होना चाहिए। ख़ुद ईसा मसीह हमारी ज़िंदगी का मरकज़ होना चाहिए। उसी से हमें सब कुछ मिलता है, और उसी की मुहब्बत सब कुछ है। यों पौलुस रसूल फ़रमाता है,

> अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़सीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं। (1 कुरिंथियों 13:3)

इसमें मरियम एक अच्छा नमूना है। वह हमें दिखाती है कि हमारी ज़िंदगी में सबसे अहम बात क्या है। बेशक माज़ूरों और ग़रीबों की मदद करना अच्छा है। लेकिन सबसे अहम यह है कि हम मुहब्बत रखें। कि हम ईसा मसीह को देखकर दीवाना हो जाएँ। कि हम उसे देखकर इतने पागल हो जाएँ कि हमारी बेइज़्ज़ती होने पर भी हमें परवाह ही न हो। मरियम को यह ला-परवाही हासिल है। वह महसूस करती है कि मेरा आक़ा

सब कुछ है। वह मेरी ज़िंदगी का सरचश्मा, मरकज़ और मनज़िल है। इसलिए मैं उस के लिए अपनी सबसे क़ीमती चीज़ क़ुरबान करती हूँ।

► **क्या ईसा मसीह सचमुच आपका आक़ा है? जब आपको उसका ख़याल आता है तो क्या आपके दिल में मरियम का-सा वलवला उभर आता है? क्या जब उसका ख़याल आता है तो आप दीवाना हो जाते हैं?**

रही यह सवाल कि

मेरा क्या जवाब है?

इतने में इर्दगिर्द के बहुत-से लोगों को मालूम हुआ कि ईसा मसीह वहाँ है, और वह उससे मिलने आए। इसके अलावा वह लाज़र से भी मिलना चाहते थे। यह देखकर राहनुमा इमाम लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा बनाने लगे। क्योंकि उसकी वजह से बहुत-से लोग उनमें से चले गए और ईसा मसीह पर ईमान ले आए थे।

अब देखो कि किस तरह के लोग ईसा मसीह से मिलने आए। कुछ न उसके ख़िलाफ़, न उसके हक़ में थे। वह बस तमाशा देखना चाहते थे। दूसरे उसे देखकर ईमान लाए। लेकिन ऐसे लोग भी थे जो उसके दुश्मन थे। ज़्यादातर राहनुमा उसके दुश्मन थे। क्योंकि वह यह बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि हमारे अपने लोग ईसा मसीह के पीछे हो लिए हैं।

सवाल यह है कि आप क्या सोचते हैं? ऐसा न हो कि आप यहूदाह की तरह हों। उसकी तरह जो मर्था और मरियम की-सी मुहब्बत नहीं रखता

था। जो ठंडे दिल से अंदाज़ा लगाता रहता था कि मुझे उस्ताद से क्या फ़ायदा मिलेगा। लेकिन शायद आप उन लोगों जैसे हों जो सिर्फ़ तमाशा देखने उसके पास आए हैं।

ख़ुदा करे कि हम सब मर्था की तरह हों जो अपनी मुहब्बत पूरे जोश से ख़िदमत करने से दिखाती थी। कि हम मरियम जैसे दीवाना हों, जिसकी ख़िदमत से कोने कोने तक ख़ुशबू फैल गई।

इंजील, यूहन्ना 12:1-11

फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। वहाँ उसके लिए एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था खानेवालों की ख़िदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था। फिर मरियम ने आधा लिटर ख़ालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क किया। ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई। लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उसने कहा, “इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके

पैसे ग़रीबों को दिए जाते?” उसने यह बात इसलिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का ख़ज़ानची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती करता रहता था।

लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने मुरदों में से ज़िंदा किया था। इसलिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। क्योंकि उसकी वजह से बहुत-से यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।